

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही। <b>ग्रन्थ निर्भय ज्ञान</b> साखी - १ आदि पुरुष कर्ता हैं, जिन्हि कीन्हों सकल पसार। पृथ्वी नीर आकाश जत, चाँद सूर्य विस्तार॥ <b>चौपाई</b> अजर अडोल अमर अविनाशी। हंस उबारि काटहिं यम फाँसी।१। अविगति अक्षय अशोक अनूपा। पुरुष पुरान अखण्ड स्वरूपा।२। बन्दी छोर अचिन्त उजागर। व्यापक ब्रह्म दया को सागर।३। दर्दवन्त सत दीन दयाला। अभय अमान अडोल कृपाला।४। सन्तन्हि सुखद जगत् को दाता। आनन्द अकह अमोल विख्याता।५। ताकी गति जीव जानत नाहीं। काम क्रोध मद लोभहिं माहीं।६। त्रिगुण ताप सहत कवलेशा। ज्ञान भक्ति नहिं गुरु उपदेशा।७। प्रेम विराग भक्ति नहिं आवत। तेहि कारण यम जीव सतावत।८। सतगुरु सामर्थ्य जीव कनिहारा। भर्म भूलि नहिं चिन्हत गँवारा।९। भव सागर चौरासी धारा। जरा मरण अध कष्ट उपारा।१०। जानहि सन्त सुबुद्धि विचारी। दया शील क्षमा अधिकारी।११। चारि खानि महँ एके बर्ता। सकल सृष्टि को एके कर्ता।१२। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। फहम करे जीव होय उबारा।१३। ऐनक मूल कहा समुझाई। दर्शन देखि नूर विलगाई।१४। तहाँ खास खुशबोई आवे। मस्त हाल ऐनक सो पावे।१५। सोई सन्त जो करे विनाई। नीर क्षीर हंस विलगाई।१६। तैसे जीव मन करे विनाई। सोई जीव जग सुधारे आई।१७। मन चोर जीव धरि खाई। करहु पारस साहब लवलाई।१८। अब पारस के करो बखाना। बूझे यह कोई सन्त सुजाना।१९। आदि सो अन्त सोई चलि आवे। सोई हंस पारस मूल बतावे।२०। जिन्हि सब पारख आदि जो कीन्हा। तिनहीं हुकुँम हमें जो दिन्हा।२१। तिनहीं हुकुँम सबे समुझाई। पारस मूल की किया बिनाई।२२। प्रथमहिं पारस कीन्ह बखाना। बूझे यह कोई संत सुजाना।२३।					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
होय धूप जो धरति तवाँई। तब धरति धूप रहा समाई।२४।	धावे पवन जो जलहिं उड़ावे। घोरि गगन मेघ बरिषावे।२५।	हृद पर ठण्डा परा जो आई। निकलि खुशबोई चहुँ दिशि धाई।२६।	लागा पारस ठण्डा जब आई। पारस से अंकुर बिलगाई।२७।	जन्मे अंकुर हृद बहुत सोहाई। चहुँ दिशि गुलजार रहा जो छाई।२८।	हृद के पारस ठण्डा अहई। जीव के पारस नाम जो गहई।२९।	जैसे धूप जो धरति तवाँई। तैसे संत जो करे बिनाई।३०।
जैसे पवन जो जलहिं उड़ावे। बरिसे मेघ धरति जुड़ावे।३१।	तैसे शब्द जो जीव मुक्तावे। जाय छपलोक तुरन्त पहुँचावे।३२।	जीव जुड़ाय पुष्प की खानी। बैठे बोलहिं अमृत बानी।३३।	साखी - २			
समुझहि सन्तहिं ज्ञानी, पारस कहा बुझाय।						
पारखी जन को काम है, सो छपलोकहिं जाय॥						
चौपाई						
करहु फहम बुझो दिल लाई। जाते जीव नष्ट नहिं जाई।३४।	बहुत गुरु करे संसारा। बिनु सतगुरु नहिं होहिं उबारा।३५।	जिन्हि सब पारस कहा बुझाई। तिन्हि जीव यहाँ मुक्ताई।३६।	सोई सतगुरु जिन्हि किया बिनाई। सत रहनि जिन्हि असल चलाई।३७।	तिन्हके खोजो मुक्तिका मूला। पाखण्ड भेष दरश सब भूला।३८।	अब कहों कपूर का लेखा। यह भेद बिरला केहु पेखा।३९।	वह केदली बिनु लाए न लागे। अपनी सुरति से वह जागे।४०।
फल फूल कबहिं नहिं होई। वह केदली बौधा नहिं सोई।४१।	नौ कोपड़ सुरबाति जो आना। केदली भाग जो आय तुलाना।४२।	ओहि अवसर सेवाती झरि लाई। पहिल बूँद परा जो आई।४३।	मास एक महँ गोटा बँधाना। कपूर बास जो आई तुलाना।४४।	पारखी जन निकालि ले आवे। हाट माँह ले आनि देखावे।४५।	कोई केदली नहिं करे बखाना। नाम कपूर सबे कोई जाना।४६।	बहुत श्वेत जो सुबुक सोहाई। बहुत जतन के राखाहिं जाई।४७।
तैसन पारस सतगुरु दिन्हा। जाति वरण सबे मेंटि लिन्हा।४८।	सतगुरु पारस मूल ठिकाना। पारस पाई हंस बिलगाना।४९।	ऐनक मूल देखि ले माना। सत रहनि जो गहे निशाना।५०।				
2						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जाति वरण कुल सबे मेटाई। सतगुरु पारस देखु दिल लाई।५१।	जैसे केदली रहे अछूता। वैसे ब्रह्म जो होए पुनीता।५२।	पंडित वेद जो करे बखाना। आदि अन्त की मर्म न जाना।५३।	काजी मोलना पढ़हिं कोराना। पारस मूल के मर्म न जाना।५४।	काजी मोलना पढ़हिं कोराना। पारस मूल के मर्म न जाना।५५।	यह पारस बुझो दिल लाई। जीव कारण सब किया बिनाई।५६।	हम जाना हमें साहब बताई। ताते भेद कहा समुझाई।५७।
परिमल पारस करो बखाना। निर्मल हंस जो भए सुजाना।५८।	प्रथमहिं दूध सबे केहु जाना। दूध में बास जो रहा समाना।५९।	पावक पर अच्छा जो किन्हा। ठंढा करि जोरन तब दिन्हा।६०।	लैन लीन्ह वास नहिं पाई। बिनु पारस काँजी होए जाई।६१।	हुआ थीर वास बिलगाना। वास सुवास सबे केहु जाना।६२।	अधरस भेद जो दीन्ह लगाई। सुरतिवन्त से कहब बुझाई।६३।	कर्म जीव मलीन जो कीन्हा। सत बिना ब्रह्म भौ छिन्हा।६४।
सतगुरु सत खोजो दिल लाई। बिनु सतगुरु नहि कर्म कटाई।६५।	फेरि जीनका पालन कीन्हा। योग जुक्ति जतन जो लीन्हा।६६।	नारि भोग से लीन्ह बचाई। ब्रह्म साफ की किया उपाई।६७।	गहिर ज्ञान भेद कहि दीन्हा। कम जुबान रहे लवलीन्हा।६८।	ज्यों ज्यों दिल में बासा भैऊ। त्यों त्यों ब्रह्म साफ होय रहेऊ।६९।	भया साफ मोह बिलगाना। तब अजपा के कहब ठिकाना।७०।	फेरि सुरति आगे कहँ धावे। श्वेत घटा गगन तहाँ धावे।७१।
देखत झरि तहाँ बहुत सोहाई। परिमल अग्र वास जहाँ पाई।७२।	भया पुनीत ब्रह्म उजियारा। छपलोक के राह सुधारा।७३।	परिमल पारस पावक अहई। जीव के पारस शब्द जो गहई।७४।	साखी - ३			
अधरस भेद यह शब्द है, सुनहु संत सुजान।						
पारखी जन को काम है, गहिर जो गहि ले ज्ञान॥						
चौपाई						
बंक नाल नाभि ठिकाना। षोड़स कमल ताहि परवाना।७५।	मूल चक्रदृष्टि जो आना। श्वेत वर्ण भँवरा तहाँ जाना।७६।					
3						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	श्वेत ध्वजा शून्य महँ देखा। यह भेद बिरला केहु पेखा।७७।	सतनाम	झलके नूर होय उजियारा। दुई बाती तहाँ निर्मल बारा।७८।	सतनाम	शून्य गगन जहाँ सुरति संयोगा। मीठा खट्टा तेजा रस भोगा।७९।	सतनाम
सतनाम	त्रिकुटि महल की खबरि जो जाना। त्रिवेणी संगम आय समाना।८०।	सतनाम	इंगला पिंगला द्वादश धावे। परिमल वास अग्र जहाँ आवे।८१।	सतनाम	अमृत कूप ताहि के हेठा। अमृत हंस चाखाहि भरि पेठा।८२।	सतनाम
सतनाम	अमृत चाखाहिं हंस भौ सारा। त्यों त्यों दृष्टि भई उजियारा।८३।	सतनाम	हंस के पारस अमृत चाखा। नाम सनीप सुरति जो राखा।८४।	सतनाम	कहे दरिया साँच यह ज्ञाना। सतगुरु से पावे परवाना।८५।	सतनाम
सतनाम	सतगुरु बिना मुक्ति नहिं पावे। सतगुरु से पारस बिलगावे।८६।	सतनाम	साखी - ४	सतनाम	घर घर सतगुरु ना कहि, ज्ञान कथे विस्तार।	सतनाम
सतनाम	सुकृत के सतगुरु कहि, हंस उतारहिं पार।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	भुजंग सोई जाके मणि बरे राति। बिना मणि नहीं भुवंग की जाति।८७।	सतनाम
सतनाम	बिना मणि नहीं होय उजियारा। औरि जगत् सब केचुआ पसारा।८८।	सतनाम	जाके होय मूल मणि माला। सोई सन्त है ज्ञान रिसाला।८९।	सतनाम	बिना मूल ज्ञान है खाली। सुरति करे अजपा जपे माली।९०।	सतनाम
सतनाम	जो यह निरखो निर्मल मोती। निर्मल ज्ञान बरे तहाँ ज्योति।९१।	सतनाम	सोई सन्त साधु की जाती। जाके ब्रह्म भेद यह भाँती।९२।	सतनाम	सोई सन्त साधो यह ज्ञाना। पारस के पावे परवाना।९३।	सतनाम
सतनाम	रहे ऊँच नीच होय जाई। कुल की कानि राखे नहिं भाई।९४।	सतनाम	जैसे भृंग कीट कहँ कीन्हा। अपनि सुरति सो पालि जो लीन्हा।९५।	सतनाम	जो नर सुरति सम्मुख राखा। सामर्थ्य आपु सरीखे भाषा।९६।	सतनाम
सतनाम	जैसे चमेली फूल जो आना। बास तिल में जाय समाना।९७।	सतनाम	तिल में वास केहु न जाना। कोई अकूफहिं से पहिचाना।९८।	सतनाम	तिल पेरे तेल जब आना। वास फुलेल बसे केहु जाना।९९।	सतनाम
सतनाम	सब घट नाम सजीवन गावे। बिनु परिचय कोई बास न पावे।१००।	सतनाम	सतगुरु शब्द खोजो दिल लाई। मिटे कुवास सुवास समाई।१०१।	सतनाम	साखी - ५	सतनाम
सतनाम	तिल को तेल फुलेल भौ, मेठा तिल को नाव।	सतनाम	सतगुरु वास समानेवो, बसे अमरपुर गाँव।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	काल सहिदानी तन में आवे । बिरला जन कोई पारख पावे ।१०२।	सतनाम	काम क्रोध ताहि उपजावे । धुन्ध काल होय नाच नचावे ।१०३।	सतनाम	डगमग करे थीर नहिं पावे । कामिनि कला देखि मन धावे ।१०४।	सतनाम
सतनाम	संशय काल जो बसे शरीर । विषम काल दुःख दीन्हों पीरा ।१०५।	सतनाम	अर्सी माँह सूर्य जो आवे । किरण तेजि अग्नि झलकावें ।१०६।	सतनाम	दृढ़ ज्ञान मूल लव लाई । तब क्षमा के करब उपाई ।१०७।	सतनाम
सतनाम	गहे मूल जैसे चन्द्र चकोरा । तैसे सुरति राखे एक ठौरा ।१०८।	सतनाम	होय शीतल काम भौ थीरा । शीतल भया मिटा सब पीरा ।१०९।	सतनाम	छापा बिना जीव मुक्ति न पावे । कोटि ज्ञान साखी अर्थावे ।११०।	सतनाम
सतनाम	जबहिं सुरति गमन के आवे । छापा सनदि ले पहुँचावे ।१११।	सतनाम	तन में गाँसी लागे कारी । निकलत पीरा होय दुःख भारी ।११२।	सतनाम	तब करब चुम्बक के खोजा । जेहि से दर्द मिटे सब सोजा ।११३।	सतनाम
सतनाम	चुम्बक देखात गाँसी धावे । मेटे दुःख सुख तब पावे ।११४।	सतनाम	चुम्बक पारस गाँसी पावे । बिनु पारस गाँसी नहिं आवे ।११५।	सतनाम	जीव पारख करे लव लाई । जाते जीव मुक्ति फल पाई ।११६।	सतनाम
सतनाम	जाते यम से होय उबारा । सतगुरु खोज करब निरुवारा ।११७।	सतनाम	सतगुरु खोज करहु लव लाई । सन्त सेवा सुरति रहु लाई ।११८।	सतनाम	सतगुरु सत शब्द निर्बाना । यम काल का मरदो माना ।११९।	सतनाम
सतनाम	मूल शब्द सत है छापा । देखात काल दूरि सो काँपा ।१२०।	सतनाम	एहि सुरति गहे चित लाई । उपजे ज्ञान प्रेम पद पाई ।१२१।	सतनाम	चौदह यम का कीन्ह विचारा । ज्ञानी समुझि के होय निनारा ।१२२।	सतनाम
सतनाम	प्रथमहिं दूत विश्वम्भर जोरा । तेरह चाकर ता सँग रोरा ।१२३।	सतनाम	मन मकरन्द एक दूत कर नाऊँ । नैनन नीर चलावे ठाऊँ ।१२४।	सतनाम	चिन्ता तन में बहुत ले आवे । कबही सुख नहिं दुःख अति पावे ।१२५।	सतनाम
सतनाम	चौथा दूत जो काम जगावे । कामिनि देखि के मन चलावे ।१२६।	सतनाम	पँचयें भोग रस रोग बहूता । राति दिन निन्द रहु सूता ।१२७।	सतनाम	छठवें दूत षटरस भोगा । तन भौ थकित व्यापेवो रोगा ।१२८।	सतनाम
सतनाम	बैठक पाँजी कामिनि पासा । थै थै जीव कहँ करे विनाशा ।१२९।	सतनाम	जौंरा भौंरा आठो वारा । नारि बटोरी के करे पुकारा ।१३०।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
गोधन कूटि के देहिं श्रापा। करहिं ग्रास राखाहिं सब दापा।१३१।	नौवें दूत जलन्धर जोरा। उठि प्रातः ले जल महँ बोरा।१३२।	दुखित तन में बहुत दुखावे। रोम रोम तन जाड़ कँपावे।१३३।	दसवें दूत रसना पर रहई। मद मांस एहि चित धरई।१३४।	आहार दैत्य के जीव खिलावें। अन्त काल फेरि नर्क दिखावे।१३५।	श्रवण दूत श्रवण महँ राखो। सुने साँच झूठ ले भाखों।१३६।	तामस दूत सबन्हि के पासा। नेकी देखि करे उपहाँसा।१३७।
करखा दूत हृदय जब आवे। करखा करि करि सबे लड़ावे।१३८।	ज्ञानी होय सो करे विचारा। समुझि के मगु चले संसारा।१३९।	चौदह दूत जग करे विनाशा। गाफिल जीव के होखे नाशा।१४०।	चौदह चिन्ह साहब चित धरई। सतगुरु ज्ञान निश्चय उर गहई।१४१।	चौदह काल बड़ो है रोरा। सन्त जानि ज्यों करें अडोरा।१४२।	सतपुरुष इन सबते न्यारा। उनकर तेज बरते संसारा।१४३।	
साखी - ६						
बूझहु सन्तहिं ज्ञानहिं, सतगुरु करहिं पुकारि।						
मुक्ति फल जो चाहे, सो माने शब्द हमार॥						
चौपाई						
पचीस प्रकृति का करो निरुवारा। ज्ञानी होय सो करे विचारा।१४४।	सूर्य उदय नहिं लेहिं निवासा। कहे दुई पहर दिन प्रकाशा।१४५।	प्रथमहिं झूठ सवेरे भाषा। यह प्रकृति निश्चय दिल राखा।१४६।	दूजे प्रकृति तीर्थ के धावे। मन चंचल हो काल नचावे।१४७।	तीजे प्रकृति के एहि स्वभाऊ। पत्थर पानी से दिल लाऊ।१४८।	चौथे प्रकृति के एहि लव लावे। पत्थर पर ले जीव चढ़ावे।१४९।	पचयें प्रकृति बेदर्द दिल आना। निश दिन खून करहिं बेईमाना।१५०।
छठयें प्रकृति षट दर्शन लौ लावे। देई अर्ध सूर्य सिर नावे।१५१।	सतवें प्रकृति भूत के पूजा। निश दिन अन्ध देव नहिं दूजा।१५२।	अठवें प्रकृति है आठो बारा। करे व्रत सब तन के जारा।१५३।	नवें प्रकृति सब झूठ बड़ाई। कहे झूठ पुण्य सब जाई।१५४।	दसवें प्रकृति दसो रस माता। कामिनि संग रहे चित राता।१५५।	ग्यारहवें प्रकृति झगड़ा लावे। निश दिन गृह मँह रार बढ़ावे।१५६।	बारहवें बरबस सबसे बोलई। छोड़े साच झूठ ले लड़ई।१५७।
तेरहवें चंचल कुमति तेहि पासा। निश दिन काल करे तेहि ग्रासा।१५८।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	चौदहवें भेष पाखण्ड दिखावे। पाखण्ड रूप सब जग जहड़ावें।१५६।	सतनाम	पंद्रहवें प्रकृति सन्त की हाँसी। त्यों त्यों काल लगावे फाँसी।१६०।	सतनाम	सोरहवें प्रकृति माया के धावे। बहुविधि माया यतन करावे।१६१।	सतनाम
सतनाम	सतरहवें प्रकृति एहि जड़ जानी। खर्चे खाय नाहिं मूढ़ प्राणी।१६२।	सतनाम	कोपि काल ज्यों करे ग्रासा। अठरहवें प्रकृति मोह कर फाँसा।१६३।	सतनाम	उन्नीसवें प्रकृति कुल कर्म जो ठानी। माया मद माँति रहे सो प्राणी।१६४।	सतनाम
सतनाम	बीसवें विषमय निश दिन धरई। कबहीं सुख नहिं दुःख सब सहई।१६५।	सतनाम	एक्कीसवें प्रकृतिकुल काम लवलावे। कोपि काल फेरि ताहि नचावे।१६६।	सतनाम	बाइसवें बैठे मूढ़ के पासा। जानि जीव आपु गये नासा।१६७।	सतनाम
सतनाम	तेइसवें प्रकृति त्रिविध संसारा। त्रिविध ज्ञान कथे विस्तारा।१६८।	सतनाम	चौबीसवें प्रकृति मोह कर फाँसा। निश दिन व्यापित यम के त्रासा।१६९।	सतनाम	पचीसवें नवधा भक्ति लव लावे। मन मत ज्ञान निशि दिन गावे।१७०।	सतनाम
सतनाम	साखी - ७					सतनाम
सतनाम	यह सब निश्चय चीन्हि के, हम भाषा निर्भय ज्ञान।					सतनाम
सतनाम	साधु संत सब बूझहिं, जो पावे पद निर्बान।।					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	पचीस प्रकृति के दलि मलि ज्ञानी। छब्बीस प्रकृति साहब पर ठानी।१७१।	सतनाम	निशि दिन सतनाम लव लावे। उठत बैठत सतगुन गावे।१७२।	सतनाम	सतगुरु सेवा करे चित लाई। निशि दिन सुख सब दुःख पराई।१७३।	सतनाम
सतनाम	सतगुरु पाँव बन्दौ चित लाई। मुक्ति भेद जो शब्द सुनाई।१७४।	सतनाम	कहें दरिया साँच हम भाषा। जो जन चिन्हहिं ताहि हम राखा।१७५।	सतनाम	जो जन शब्दे करे विचारा। सबे तेजि के होहु निनारा।१७६।	सतनाम
सतनाम	ज्ञान अकूफ निशि दिन धरई। साहब सुरति सदा चित रहई।१७७।	सतनाम	करे भक्ति प्रेम लवलावे। नेक होय नहिं काहु दुखावे।१७८।	सतनाम	योग युक्ति गहे चित लाई। ताके काल निकट नहिं जाई।१७९।	सतनाम
सतनाम	गहिर होय गहे जो ज्ञाना। असल भेद करे परवाना।१८०।	सतनाम	चोर साहु का करे बिनाई। सत शब्द गहे चित लाई।१८१।	सतनाम	साखी - ७	
सतनाम	सतगुरु शब्द प्रतीत करि, गहिहो सत चित लाय।					सतनाम
सतनाम	छपलोक के जाइहो, बहुरि न भव जल आय।।					सतनाम
सतनाम	ग्रन्थ निर्भय ज्ञान पूर्ण					सतनाम
सतनाम	7	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम